प्रकाशक

मैथिल नवयुवा साहित्य परिषद्‌कें लेल
सन्तोष कुमार मिश्र

सम्पादक सन्तोष कुमार मिश्र
जनकपुरधाम-७, नेपाल

सल्लाहकार

कालीकान्त झा 'तृषित'
धीरेन्द्र प्रेमर्षि
महेन्द्र कुमार मिश्र

पहिल संस्करण : २०६२ माघ

मुल्य : १००।- टका मात्र

आवरणकला : सन्तोषकुमार मिश्र

कम्प्यूटर : गंगेशगुञ्जन झा
विनित ठाकुर

कम्प्यूटर डिजाइन : होम डेक्सटप
वालीफाल, ललितपुर

अएनामे हमर मूँह

हमर एकटा मित्र सभ दिन एक्कहिटा बात कहैत छलाह–“दुनियामे सब काज करू, मुदा कविता नइ लिखू ।” हम पुछियनि–“किएक ?” जवाबमे ओ कहल करथि–“लिखिकऽ की हएत, के छपा देत ?” हँ, ई सोचऽ वला बात तँ छैक, मुदा एहनो नहि जे कविता लिखले नहि जाए । नियत ठीक रहबाक चाही । सभ कवि गरीबे नहि रहैत छथि । मुदा जँ कि कविकेँ अप्पन मात्र नहि, आम लोकक बात सेहो लिखबाक रहैत छैक । तँ खास कऽ मिथिलाक लोकक प्रतिनिधित्व करैत कवि-मोन आर्थिक रूपेँ प्रायः गरीब भेल करैत अछि । आ, कविता लिखनिहार सभ निकम्मे होइत अछि, से बात तँ पक्के नहि छैक । मोन होएबाक चाही, बस आर की !

मैथिली साहित्यक बजार बड़ कमजोर छैक । एतऽ कीनिकऽ पढ़बाक सभ्यताक विकासे नहि भऽ पाएल छैक । ताहूमे साहित्यमे सभसँ बेसी लिखाएवला विधा कविते मानल जाइत अछि । स्वाभाविक रूपेँ जे चीज बेसी उपलब्ध होइत छैक, तकर बजार भाओ कमि जाइत छैक । एहि कारणे कविगणकेँ छपबितो दिक्कत आ छपियो गेल तँ पाइ नहि भेटैत छनि । मुदा विश्वास कएल जाए– जँ माँ सरस्वतीक कृपा रहलनि तँ जतबे होए हमसभ अएनामे सङ्ग्रहित कवितासभक कविलोकनिकेँ किछु ने किछु पत्रम-पुष्पम अवश्य समर्पित करबनि ।

नेपालमे मैथिली कवितामे कलम चलौनिहार कविलोकनि अपन अमूल्य समयक सदुपयोग कऽकऽ लिखल गेल कविता वा कवितारूपी भावना जे हमरा उपलब्ध करौलनि, तकरा लेल सम्पूर्ण कविगणक प्रति आभार प्रकट करैत छी । हँ, कविता सङ्कलनक क्रममे कतेको एहनो लोक भेटलथि जे सम्पादनक नामपर हमरासँ उमेर, जाति आ घर पूछिकऽ रचना उपलब्ध करएबासँ कतराइत रहलाह, हुनकोसभकेँ विशेष धन्यवाद दैत एकटा अङ्ग्रेजीक कहबी समर्पण करैत छियनि—“Sometime day is long and sometime night.”

कविता कविक भावनात्मक सोच होइत छैक । आ, जे चीज शुद्ध भावनासँ बहराएल वा जुटल होए से ककरो अपकार नहि कऽ सकैत छैक । हँ, घी अपकारो करैत छैक; कुकूरकेँ ।

निहोरा कराइयोकऽ रचना नहि देनिहार आ बादमे किनको हाथे कविता भेजबा देनिहार कविलोकनिक प्रति सेहो हार्दिक धन्यवाद देबऽ चाहैत छी । मुदा ओहन महान व्यक्तित्वक कविता एहि सङ्ग्रहमे समावेश नहि छनि ।

एहि सङ्ग्रहक प्रणयनक क्रममे सहयोग कएनिहार व्यक्तिसभमध्य सभकेँ नहियोँ तँ किछुगोटेकेँ धन्यवाद देनेविना नहि रहि सकैत छी । धन्यवादक क्रममे एहि कविता-सङ्ग्रहक सम्पादनमे विशेष रूपसँ सहयोग करैत भूमिका सेहो लिखि देनिहार श्रद्धेय धीरेन्द्र प्रेमर्षिक प्रति कृतज्ञता व्यक्त करैत छियनि । तहिना सर्वश्री कालीकान्त झा ‘तृषित’, महेन्द्रकुमार मिश्र, गंगेशगुञ्जन झा, श्रविणकुमार मिश्र आ विनित ठाकुरक प्रति सेहो धन्यवाद अर्पण करैत छियनि ।

ई कविता-सङ्ग्रह नामेजकाँ समाज, साहित्य आ संस्कृतिक लेल अएना साबित होएत से हम आशा रखैत छी । सङहि पाठकसभसँ सेहो प्रतिक्रियाक आश रखैत कलम बन्द करऽ सँ पहिने एकटा कहबीक सङ्ग कलम बन्द करऽ चाहब—"Well done is better than well said."

सन्तोषकुमार मिश्र
तिला सकराँति, २०६२
काठमाण्डू

अएना

हँ, कहल जाइत अछि साहित्य समाजक अएना होइत अछि । अएना मात्र किएक, एहिसँ बहुत किछु बेसी होइत अछि । बल्कि कही– समाजक मार्गदर्शक सेहो होइत अछि साहित्य । खालि समाजक मूहटा देखा देनाइ जे 'हओ समाज, तोहर मूह एहन छह, हे देख लएह', साहित्य नहि थिक । नीक मूह एहन होइत छैक आ एहन मूहकेँ अधलाह मानल जाइत छैक, से बुझएबाक आ देखएबाक दायित्व सेहो साहित्येक होइत छैक । किएक तँ सुन्दरताक रङ्ग-रूप तथा मानदण्ड बदलैत रहलैक अछि, समय-काल-परिस्थिति अनुसार ।

कोनो समयमे फूलक वर्णन कविता होइत छल, मुदा वर्तमानमे काँटसँ होबऽवला पीड़ाक अनुभूति आ अकाबोन फाँड़बाक कामना, सङ्कल्प एवं कार्य साहित्य होइत अछि । मैथिल जनमानसमे चरम निराशा एवं धर्म-संस्कृतिसँ जबरन विमुखताजन्य कारणसँ उदासिनता पसरल चौदहम शताब्दीमे आमलोक बीच रस-रोमाञ्च प्रवाहित कएनिहार महाकवि विद्यापतिक श्रृङ्गारिक गीतसभ तत्कालीन समयमे साहित्य छल, मुदा आजुक समयमे जँ ओहि प्रकृतिक रचना कएल जाए तँ ओकरा हस्तविलाससँ बेसी किछु नहि कहल जा सकैत अछि ।

मुदा जे-जेना कहि दी, साहित्यकेँ समाजक अएनावला छविसँ अलग किन्नहु ने कएल जा सकैत अछि । जे विद्वान सर्वप्रथम ई बात कहलनि, ओ सार्वकालिक बात कहलनि । साहित्यरूपी समाजक अएनाक ई दायित्व होइत छैक जे ओ अपनामे समाजक समस्त दागसभकेँ उजियार कऽ दिअए, जकरा देखिकऽ समाज अपन मूहपर लागल दागसभकेँ नीकजकाँ पोछिकऽ चिक्कन-चुटपुट भऽ संसारमध्य सीना तानिकऽ चलि सकए ।

नेपालक मैथिली साहित्यमे ई प्रसन्नताक बात मानल जएबाक चाही जे समाजक लेल अएनासभक निर्माण करबामे युवासभक एकटा नमहर जमात बेस उत्साहक सङ्ग लागल अछि । मुदा आजुक नवाङ्कुरित मैथिली साहित्यमे एक्केटा दुर्गुण पाओल जाइत अछि जे ओ देखबामे ओतेक फड़िच्छ नहि अछि । बहुतो तरहक दागसभकेँ सेहो अङ्गीकार कएने अछि । एहनमे समस्या समाजकेँ भऽ सकैत छैक जे जखन ओ अपन मूह साहित्यक अएनामे देखऽ लागत तँ कोन दाग अप्पन आ कोन दाग अएनाक, ओकरा छुटिआबहिमे भाम्ही ने पड़ि जाइक ।

प्रस्तुत कवितासङ्ग्रह 'अएना' मैथिलीक नवीनतम पीढ़ीक रचनाकारसभक एक तेहने सङ्कलनक रूपमे हम देखिरहल छी, जे समाजक दागक सङ्गसङ्ग अपनो मूहक दागसभकेँ मिझराकऽ एकटा कोलाज प्रस्तुत करैत अछि । एहि कोलाजमे आन कोनो चित्र स्पष्ट होइत होइक वा नहि, मुदा एतबाधरि निर्विवाद जे नवतुरियासभक उत्साहक चित्र एहिमे बड़ फड़िच्छ रूपेँ देखल जाइत अछि । ई उत्साह मैथिली साहित्यमे अपन उपस्थिति दर्ज करएबाधरि मात्र सीमित नहि रहिकऽ कालान्तरमे समाजक चेहराक दाग आ अपन चेहराक दाग छुटिअएबाक आयास करबादिस सेहो एहि प्रतिभासभकेँ प्रेरित करैक, हमर हार्दिक सदिच्छा अछि ।

एहि बातपर विश्वासक आधार एहूसँ तैयार होइत अछि जे नवयुवासभक एहि प्रयत्नमे कतेको स्थापित आ अभिभावकतुल्य साहित्यकारसभ सेहो अपन रचना उपलब्ध करा हिनकासभक डेगसँ डेग मिलबैत देखल गेलाह अछि । आ ताहूँसँ बेसी एकर सम्पादकक जिवटपनी कही जे अग्रजोसभकेँ घिसिआकऽ अपन पाँतिमे ठाढ़ कऽ लेने छथि । तेँ आजुक सुस्थापित कतेको साहित्यकार मात्र नहि, महाकवि विद्यापतिपर्यन्तक कविता एहि सङ्ग्रहमे सन्हिया गेल अछि । आ, एहिसँ निश्चितरूपेँ पाठकसभकेँ पुरानसँ लऽ नवका चाउरधरिक स्वादिष्ट परिकार सुआदबाक सुअवसर भेटतनि ।

सङ्ग्रहक तैयारीमे एकर सम्पादक सन्तोषकुमार मिश्रक जाहि तरहक लगन हम देखलहुँ, तकर प्रशंसा कएनेविना नहि रहल जा सकैत अछि । हम आशावादी छी जे सम्पादक मिश्रसमेत एहिमे कविक रूपमे योगदान देनिहार समस्त नवतुरिया साहित्यिकसभ एहि लगनकेँ आत्मसात करताह आ अपन ऊर्जाकेँ संख्यात्मकतादिस मात्र उन्मुख नहि कऽ गुणात्मकताक पथपर सेहो अग्रसर करौताह । सन्तोषक एहि अएनामे स्वयं सन्तोषसहित मैथिलीक काननमे उगल सहस्रो पुष्पपौधसभ समाजक सङ्गहि अपनो मूह देखैत मिथिला समाजकेँ आ अपन कवित्वकेँ गोर अदग्ग बनएबादिस क्रियाशील आ सक्षम होएताह, से हमर अटल विश्वास अछि ।

धीरेन्द्र प्रेमर्षि
२०६२/०७/०९

गोसाउनिक गीत

–कविकोकिल विद्यापति ठाकुर

जय जय भैरवि असुर भयाउनि, पसुपति-भामिनि माया ।
सहज सुमति वर दिअ हे गोसाउनि, अनुगति गति तुअ पाया ॥२॥

बासर-रैनि सबासन सोभित, चरन चन्द्रमनि चूड़ा ।
कतओक दैत्य मारि मुँह मेलल, कतेक उगिलि करु कूड़ा ॥४॥

सामर बरन, नयन अनुरंजित, जलद-जोग फुल कोका ।
कट कट विकट ओठ-पुट पाँड़रि, लिधुर-फेन उठ फोका ।६॥

घन घन घनन घुघुर कत बाजय, हन हन कर तुअ काता ।
विद्यापति कवि तुअ पद सेजक, पुत्र बिसरु जनि माता ॥८॥

आचार्य रामलोचन शरणद्वारा सम्पादित विद्यापति की पदावलीसँ

प्रायः तखनहि मोन पड़ब हम
डा. धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'

बूझि नहि सकबह कनियो हमरा
जावत जीवित छी एहि जगमे ।
खालीपन धरि खूब अखरतह
एकाकी हएबह तोँ भव्यमे !

भाषा हमर कठिन ने संगी
ओइपरसँ तोँ पूरा परिचित !
अभिन्धेमे छी बाजि रहल हम
लागय व्यंग्य तँ कि अछि अनुचित ??

जानि रहल छी एक तथ्य हम
एकर मोन बढ़ब अछि निश्चित
मुदा ताहि लेल जान कि चाही
बजय सितारी केहनो सुरमे
मुदा कसल जँ भीड़ टूटै अछि
होइत अछि किछु गप्पे दोसर !
एहने सन किछु तान कि चाही ।

नीक हएत जे खाली कए दी एहि मंचकेँ
आब ओ शून्यक बेला ! !
प्रायः तखनहि मोन पड़ब हम
प्रायः तखनहि अखरत एक अभाव
एहि बतहा अभिनयकर्ताकेर !

गजल
–डा. राजेन्द्रप्रसाद विमल
मटिया तेल नहि अछि तँ, सोनित अपन गाड़ि लिअ
हमर क्रान्ति-गीतसँ, दियौरीसभ बारि लिअ ।
अजगर अन्हरियाकेर डरसँ पड़ा जाएत
तरहत्थीपर संकल्पक सुरुजटा उतारि लिअ ।
धधकल नहि चुल्हा तँ, आँत धधकबे करतै
आँतसँ अवाज मिला, चुलहा पजारि लिअ ।
जहियासँ आयल ओ, खूनक बरिसात भेल
डूबल चिनबार मुदा, बाँहिकें उघारि लिअ ।
जोड़ि बाहि-बाहिसँ, जोरसँ अवाज दियौ
रोटी चोरओने अछि, पेट ओकर फाड़ि लिअ ।
बहिरा करइत अछि, डसैत रहत पुजू नहि
घेटे छपैट दियौ, हाथमे तरुआरि लिअ ।
हमर खून जे पिलक, कए देबै खून तकर
अपन खून-खूनमे धधरा पसारि लिअ ।
रावण-वध धर्म थिक, जरत पापकेर लंका
डंकासँ पीटि-पीटि, धर्म-ध्वजा गाड़ि लिअ ।
शब्दक हुक्कालोली, भँजिते रहब हम "विमल"
चेतनाक दीपावलि, सजा आ सिङारि लिअ ।
मिलबैत चलू बन्धु हमर, शब्द संगे शब्द
बरिसत ई भात बनि आङन अजबारि लिअ ।

गजल

—महेन्द्रकुमार मिश्र

जिनगी रहल पियासल, सपना सजाकऽ चलि गेल
दुतियाक चानजकाँ, मुखड़ा देखाकऽ चलि गेल

बूझल नहि छल हमरा फराक भऽ जाएब
संयोग कोन छल अहाँसँ मुलाकात भऽ गेल

टीस उठिरहल अछि, छातीक कोँढ़-कोँढ़सँ
असगर अन्हारमे निरीह बनाकऽ चलि गेल

आशमे छलहुँ जिनगीभरि साथ रहब
मुदा ई वेदर्दी जवाना, सनकाकऽ चलि गेल

सप्पत अछि हमर, लाश देखऽ आएब जरूर
जीबाक छुच्छ वादा, मुदा इरादा बढ़ा लिअ

बाट तकैत आँखि, नोराएल आशमे
निष्ठुर केहन ओ कफन ओढ़ाकऽ चलि गेल

बालगीत

—गुरुदेव कामत

हम छी बच्चा उमरके कच्चा
बाबु हमर गबैया यौ
सुनु दिदी भैया यौ

बाबूजकाँ हमहुँ बनबै
देश-विदेशमे नाम कमबै
भाग अगर जँ साथ देतै
खूब कमएबै रुपैया यौ
सुनु दिदी भैया यौ

माय-बाबुकें सेवा करबै
भाइ-बहिनसँ प्रेम रखबै
साथीसभसँ मीलिजूलिकऽ हम

नाचबै ता-ता थैया यौ
सुनू दिदी भैया यौ

मनुक्ख हएबाक खुशी

—श्यामसुन्दर शशि

पेटक ज्वालामुखीकेँ शान्त करबामे
रने-बने बौआइत
अपस्याँत
चम्पा चौधरी आइ बड़ प्रसन्न अछि ।

तिसियाही करु तेलसँ
अपन देहकेँ छछाड़ैत अछि
भीतक देवालमे साटल
फुटलाही अएनालग ठाढ़ भऽ
झरनीसँ बगड़ाक खोँता बनल
केशक लट सोझरएबाक प्रयास करैत अछि ।
पन्द्रह बरिस पहिने बिआहमे आएल
पोडर, एस्नो आ टिकुली
बक्सासँ निकालि, झाड़ि-पोछि
यथास्थान लगबैत अछि ।

साउन-बकुटा भेल
टेरलिन-बिअहुती कुर्तापर
लोहासँ लोहा चढ़बैत
फुलगेनीक बापकेँ सोर पारैछ चम्पा ।
"......की करै है ? एमहर अबौ तँ ।
......कनी आङीक हुक लगा दौक
पछाड़ि नहि पबै छिऐ ।"

अवधि चौधरीक सगर देह झनझना उठै छै ।
जनु करेन्ट लागि गेल होइक
"एहन तँ गौनोके राति नहि ।"
आ, चम्पाकेँ अपन बाहुपाशमे कसि लैछ अवधि ।
असलमे आइ गामक आने कमैयाजकाँ
ओहो दुनू प्राणी सदरमुकाम जा रहल अछि ।
कमैया मुक्तिक कागत-पतर लाबए ।

आब फुलगेनी आउर मजदूरीक लेल स्वतन्त्र अछि
मोन लागत काज करत
नहि लागत नहि करत
जकरामे मोन हेतै तकरेमे करत

सोचै आइ ओकराआउरकेँ
मनुक्ख होएबाक सुख प्राप्त भऽ रहल छै ।

इतिहास

–डा. सुरेन्द्र लाभ

अवाजक समुद्र
हल्लाक ज्वारभाटा
अनन्त ....
अनन्त कालसँ होइत पुनरावृत्ति
पुनरावृत्ति बनैछ इतिहास
हल्लाक इतिहास ।

ध्वनिक अंकमे
समाहित लोक
मुक्त होएबाक हेतु
व्याकुल लोक !

आवाजहीनता !
शब्दहीनता !
मौनता !
स्तब्धता !
एकटा स्वप्न
दिवास्वप्न भऽ गेल अछि ।

इतिहास-सिंहासनक हो
वा हो संघर्षक
इतिहास दानवक हो
वा हो मानवक
सभ इतिहास
हँ, प्रत्येक इतिहास
हल्लाक इतिहास थिक ।

हल्लेहल्लासँ भरल
जतए शून्यताक अभाव थिक
शान्तिक अभाव थिक
हँ, प्रत्येक इतिहास
हल्लाक इतिहास थिक ।

के कहने छल बेटी जनमाबऽ
—अशोक दत्त

बजार गहिंकी आ पैकार,
आवश्यक होइछ जीवन हेतु
मुदा
एखनका बजारू संस्कृति
विवश कऽ रहलैए
आत्महत्या आ हत्या हेतु
कतेकोकेँ ।
कतेको माय-बाप
सुताबऽ लागल अछि
अपन सन्तानकेँ भ्रूण अवस्थामे
बजारमे खुजल
रंग-विरंगक दोकानक कारणे ।

पहिनहु बजार आ दोकान छलै
जतऽ भेटैत छल मात्र
मानवक उपभोग्य वस्तु
खाद्यान्न, पशु, आभूषण
कपड़ा-लत्ता आदि-इत्यादि
जे आवश्यकता आ क्षमताक आधारपर
किनैत रहल मानव ।
मुदा, अखन बजारमे
मानव सेहो बिकाइछ ।
अलग-अलग वस्तुसन
अलग-अलग माल
रूप, कूल, खन्दान आ डिग्री
प्रमुख अधार अछि मुल्यक ।
आवश्यकता अछि ?
भेटि जाएत ।

जेबीक ओजनपर
निर्भर करै छै बजार ।
जेब खाली अछि ?
घुमैत रह दोकाने दोकाने
सहैत रह दुत्कार आ फटकार
पैकारसभसँ
के कहने छल बेटी जनमाब ?

आबि कऽ चलि गेल

नरेश ठाकुर
गंगुली ६, धनुषा

हरहरहीजकाँ हड़हड़ाइत
भुतलायलजकाँ धड़धड़ाइत
लगहरिजकाँ गड़गड़ाइत
डानिजकाँ बड़बड़ाइत

आरि-धूर कोड़ैत
सडक पूल तोड़ैत
मोसिन फोड़ैत
फुफकार छोरैत
आबिकऽ चलि गेल बुढ़िया बाढ़ि ।

टाटकें तड़तड़बैत
घरके मड़मड़बैत
सभके हड़बड़बैत
कामके गड़बड़बैत

आबिकऽ अड़ि गेल
पोखरि-इनार भरि गेल
कतेको भरि गेल
विपत्ति पड़ि गेल
मुदा आबिकऽ चलि गेल बुढ़िया बाढ़ि ।

खेनाइ बन्द
हगनाइ बन्द
कहनाइ बन्द
रहनाइ बन्द

नमस्कारम बाढ़ि
बारम्बारम बाढ़ि
हजारम बाढ़ि
चमत्कारम बाढ़ि
मुदा, एना जुनि आउ हे बुढ़िया बाढ़ि

बुढ़वा

उपेन्द्र भगत नागवंशी

बुढ़बा बड़बड़ाइत रहैत छल
टण्डेली नइ कर,
एहिसँ की होतौ
देखै नइ छही समय
कमो खटो पाइ कमो
नइ तँ भुक्खे मरबेँ ।

की करू
चोरी करू, डकैती करू
आ कि पाकेटमारी करू
नइ, मेहनति कर
इमानदारीसँ कमो
भुक्खे नइ मरबेँ ॥

चलू अहींक बात मानि लेलौँ
बड़ मोसकिलसँ भेटल काम
करऽ लगलौं मेहनति
कमाय लगलौं टका
बड्ड नीक,
मुदा कहाँ भरैत अछि

पाँचो परानीके पेट ।

गलल जाइय देह
धीया-पुता हमरा कहैत अछि
बुढबा ..... हमरालए की कएलह ?
हे, दीनानाथ ....
हमहूँ आब बड़बड़ाइत छी ।

धोबिया पाट

कन्दर्पनारायण लाल कर्ण 'सुशील'

अवस्था देशक दयनीय
मुदा कटाउँभ नेतासभक
पार्टीगत तरा-उपरी देखि
दया अबैत अछि व्यवस्थापर
नीके कयल छोड़ि देल
बनब नेता देखनाइ सपना
किछु दिन सबार छल भूत
हमरो ....

छोड़ा देलक लागल भूत
तेहन पटकल धोबिया पाट
भगता छल मोचण्ढा
आँजर-पाँजर तोड़लक तेहन
हाड़क पेँच-पुर्जा
छिड़िया देलक चारूदिस
आब जखने चर्चा नेताजीक सुनैछी
मोन पड़ि जाइत अछि धोबिया पाट
खत कटकल धोबी घाट
होइय मोन,
भोकासी पाड़ि कनितहुँ
मूहसँ सहजे पुक्की
बहार भऽ जाइछ

नेता ? नहि-नहि
एहन काज .... आ, हम !

घड़ी

सुनीलकुमार मल्लिक

घड़ीमे
घण्टाक सूइसँ बेसी
मिनटक सूइसँ बेसी
सेकेण्डक सूइ चलै छै
मुदा
कतेक अनसोहाँत लगै छै
जे
सेकेण्डसँ बेसी मिनटक
आ
मिनटसँ बेसी
घण्टाक मान भऽ जाइ छै
अहाँ खूब दौड़धूप करै छी
अहाँक मगजसँ
पसेनाक पमार बहैत रहैछ ।
माने, अहाँ खब चलायमान छी
मुदा,
घण्टाक घुसकुनियाँजकाँ
अहाँक मालिकक मान
बेसी बढ़ि जाइ छनि
एना किएक ने होइ छै
जे चलबो अहीँ बेसी करितौँ
आ
मान सेहो अहीँक बेसी रहैत !

झुनियाँ

डा. रेवतीरमण लाल

झुनियाँ ओहि बाटदिस
निर्निमेष ताकि रहल
खटियापर बैसल
आँखि चोन्हरा जाइ छै ।

बाट जाइत-जाइत
बहुत दूर जा
मूड़ि जाइत छैक
मझाउ गाछीदिस आ
हेरा जाइत बुझना जाइत छैक
ओही गाछीमे ।

ता छौंठी कोरा महक
टेल्हबाक लेहरि देनाइ
आ घरमे रुग्ण पुतोहुक
कुहरैत ध्वनि
कानमे पैसिते
मनमे पुनः पीड़ा दै छै
ओ पुनः ओही बाटदिस
तकैत अछि ।

बेटा मुनेसरा
ओही बाटे औतैक
कान्हपर बहिङा
आ झुनुर-झुनुर करैत
धानक बोझ धएने
दुलकैत ।

आइ भात अबस्से खएतै
आ जुड़एतै सभगोटे
कए साँझ भऽ गेल छै
चूल्हिमे ऊक नहि पड़लैक अछि
बुढ़ियाक झुर्री पड़ल
कपारपर
झुर्री किछु तना जाइ छै
प्रसन्नताक आभास

मुदा फेर,
मुनेसरा नहि अबै छै
आ उएह निराशा
बाट ओहिना
हेरा जाइत बुझाइ छै
ओही गाछीमे ।

कान्हमे टेल्हबाक चिकरनाइ
पुतोहुक कुहरनाइ
झुतियाँक मनकेँ
अस्थिर बना दै छैक
मुदा करतै की ?
अपने रोगसँ लोथ भेल
खाटपर बैसल
चिन्ता मग्न
जे ओकर स दिनक
नियति रहलैक अछि ।

नजरिपर पड़ैत छैक
गोनू बाबू
तमाकुल चुनबैत
काँखतर मकुआ लेने
झुनियाँ मागि बैसैत छैक
एक जुम तमाकुल
आ पूछि बैसै छैक
कहू बाबू कुशल छेम
गोनू बाबू चुटकीसँ
तमाकुल दऽ
चलि दै छथिन
बेपरवाह
झुनियाँ तमाकुल पाबि
तिरपित होइछ !

झुनियाँक कानमे पड़ै छैक
पुनः टेल्हबाक
उग्र रुदन आ

पुतोहुक कुहरब
बढ़ि जाइ छैक ।
बुढ़ियाक आँखि
छिड़िया जाइछै पुनः
ओही बाटपर
आ हेरा जाइ छैक
बहुत दूर ओही गाछीमे
होइ छै
छौंडा अएबे करतै
अबिते हएतै ।

गीत

अशोक चौधरी

कहिया अहाँसँ होयत आब मिलन
एकहु घड़ी नहि मोनमे होइय चएन
अपन प्रेमके याद पारू प्रियतम
तरसि खून रहल छी, तरसिते रहबै अहाँके विना
कहिया अहाँसँ ....

हमर सभटा अपराध माफ करब
जे हमरासँ भूलमे भेल हो
दुनियाक सभे खुसी, अहाँके भेटए
हमर अहाँ प्राण जीवन आ धन
अहीकेँ चरणमे लागल अछि लगन
हमरो हृदयपर विचारू प्रियतम
ई जेना बरसै, बरसिते रहत, अहाँके विना
कहिया अहाँसँ ....

विरहके अनेको उठैत अछि तरंग
आउ उठाउ लगाउ अंगसँ अंग
अपना वियोगेमे नहि मारू प्रिय
भटकिते रहल मन भटकिते रहत, अहाँके विना
कहिया अहाँसँ ....

बडा विचित्र ई देश अपन

विनोद चन्द्र

बड़ा विचित्र ई देश अपन, जतऽ देखबै सभ दिन आराम
केओ कैरमबोर्ड, पूल पर झूलैत, केओ फाँफ कटैत अफिसमे

किछु जनता माओवादी मारलक, किछु सैनिककेर भेल शिकार
किछु दुनूदिस भारत भऽ गेल, बचल-खुचल किछु पाया पार

बुढबा-बुढिया सभ गाम सम्हारलक, शहरिया बुढवा भेल नेता
विनु काजक मारे कार्यकर्ता, विद्वान विदेशकेर धयलक रस्ता

पढब-लिखब तँ जाउ विदेश, एतऽ स्कूल नहि बनिया दोकान
एडमिशनधरि जमाएसन मानत, तकरा बाद नहि देखब मुह-कान

काम-काज नहि होइछ एतऽ बेकारी एतऽक पुरान बिमारी
कुकर्मी नेतालग पाइ अपार, किछु नहि करत ओ हितकारी

नाकाबन्दी आ तालाबन्दी सभ दिन एतऽ नाराक जिन्दावाद
चक्काजाम आ रस्ताबन्द करबाबऽ मे सभ ओस्ताज

टायर बारिकऽ रेलिङ तोड़िकऽ मात्रे भेटत एतऽ काज
पाथर फेकब, ईंट बजारब, लाठी भाँजब गुलेतीक चाही तिरंगवाज

खेती-पाती पानिसँ डूबि गेल, नदि काटिकऽ लऽ गेल घर
एहनो डूबल शहरमे प्राणक पाछाँ, दुश्मन लागल हे ईश्वर

नवयुवकसभ विदेश चलि गेल, सम्पत्ति सभ प्रकृतिक ग्रास
दुशासनक कुशासनमे फसल, दूर-दूरधरि नहि कोनो आश

एहने देशक नागरिक हम, जकरा नहि बँचबाक अधिकार
ओ कि बचाओत जनताके, जकरा गरदनिपर अपने तरबार

बस एकटा विनती अछि मा अम्बे, जल्दी मारू दुश्मन तमाम
से जँ कठिन हो तँ हे जननी, फारू पृथ्वी आ दऽ दिअ सामूहिक आराम

सम्बन्धक नव सूत्रक खोजीमे

सरस्वती चौधरी ‘रचना’

सम्बन्धक कोनो सूत्र
नहि राखऽ चाहै छी बान्हल अहाँक संग
रत्ती-रत्ती छहोछित्त कऽ
मुक्त होएबाक होइछ इच्छा
एकटा खूजल परिसरमे
विचरणक अप्पन फूट आनन्द होइछ ।
मुदा अहाँक संग हमर सम्बन्धक
नव-नव परिभाषा खेजबाक हमर इच्छा ।
हमरा फेरसँ झटिआ देलक अछि
हमर अपने घरक बाट
बिसरल जा रहल छी ।
कि अछि अहाँक संग सम्बन्धक सूत्र
जतेक तोड़बाक कएल जाइछ प्रयत्न, प्रयास
ततबए झमटदार भऽ आँखिक आगू
भऽ जाइछ ठाढ़
आ देखलो बाट हेरा जाइछ
आगू रहि जाइछ अहाँक
मात्र अहाँक मुह आ
राग-अनुरागसँ तर-बतर भेल
सम्बन्धक मजबूत सूत्र
आब तँ लाज लागल अछि
मुक्तिक हमर इच्छा
मात्र लौलक रूपेँ कएल प्रयास अछि ।
हम तँ कहिया नहि
मन्दिरमे भजन करबा लेल
स्वयंकेँ प्रस्तुत कँ चुकल छी ।

धिक धिक तोरा

मिथिलेश ठाकुर 'मनु'
महोत्तरी– १, महोत्तरी

जागू पुत्र महज मिथिलाके
    मायक सुन भेल कोरा
मा मिथिला करुणासँ भरल
    माङि रहल अछि कोरा ।
जतऽ अयाची, मण्डन भेला
    गोनु झा बेजोरा
जनक, विदेही, विद्यापतिसन
    पुत्ररत्न भेल मोरा ।
कहि-कहि मिथिला निज आङनमे
    कानथि जेना चकोरा
तिनकहि आङन केतु बालक
    सूति बनल कुलबोरा ।
आ आङनमे मा मिथिलाके
    नहि तँ धिक धिक तोरा ॥ १ ॥

जकर मनोहर गीत सदक्षण
    पूरब कौशिक गाबए
तहिना कलरब चढ़ए गगनमे
    पश्चिम गण्डक धाबए ।
दक्षिण गंगा शुद्ध शलीलसँ
    चरण पखारए माँके
तहिना उत्तर दिव्य हिमालय
    शिश उठौने माँके ।
बीच मनोहर सुमन वाटिका
    माँ मिथिला आछि बनल
तकरहि सन्तति हम मिथिलाके
    किए एतऽ छी दहल
माँ मिथिलाके कोरामे हम
    बैसि मधुर गएनेछी गीत ।
गीत मनोहर सुन्दर पावनि
    आबि बनल जीवन-संगीत ।

मिथिला नहि भेल कखनहुँ शिथिला ।
      मनु कहै छथि तोरा
आ आङनमे माँ मिथिलाके
      नहि तँ धिक धिक तोरा ॥ २ ॥

आउ, हमरा प्रेम करू

रामभरोस कापडि 'भ्रमर'

बाटमे ककरो ठोकरसँ
छहोछित्त भेल पाथरजकाँ
हमरा अहिना निरित भेल
ओंघड़ायल नहि छोडू
आउ, हमरा प्रेम करू ।
हमर चाहतक कोनो क्षणकेँ
अपना नहि बना सकलहुँ
जाहि परिवेशमे जीबाक बोध भेल
स्वयं हरा चुकल हयबाक महशूस कएलहुँ
आ तखन अहाँक उपस्थिति
हमर अस्तित्वबोधकेँ जगौलक,
आउ जखन जीबाक इच्छा जागल अछि
तँ बढ़ल अछि अहाकँ ई विरक्ति .... ।
नहि, आउ, हमरा प्रेम करू ॥
अहाँक आँगनक कोनटामे
उगल अनेको गुल फूलक
पसरल सुवास हमरा आकर्षित कएने रही,
निरस आ उद्देश्यहीन जीवनक साँस
कोनो दमके रोगीजकाँ
उर्द्धस्वासमे परिवर्तित भऽ रहल समयमे
अहाँक परिवेशक सुवास
कोनाकऽ पलटौने रहए स्वांस
जकर सुखानुभूति हम बँटने रही अँहुक सङ्ग
आ अहाँक सहमतिएसँ
हमर स्वांसक गति चलल रहय ।
आइ अचानक किए अहाँ लसकि गेलहुँ
आनक सङ्ग आ पुनः काटने छहोछित्त पाथरक
स्पर्शानुभूति देलहुँ हमरा लेल,

नहि, अहाँ एना नहि कऽ सकै छी
आउ, हमरा प्रेम करू
भऽ सकैछ कोनो एकटाक अवसानसँ
की फरक पड़तै ककरो
विविधतापूर्ण जीवनमे,
मुदा छातीभरि प्रेमक सपना लदने
मरऽ बलासभक श्रापसँ
कोनाकऽ बाँचि सकत स्वार्थी, परपीड़कसभ
चरित्रमे लागल कोनो लाञ्छना
जीवनभरि अंगेजने अहाँक जीबाक
नहि रहि जाएत कोनो अर्थ
हमरा लेल
बरू, एखनो सुधारू, पलटू
आउ, हमरा प्रेम करू ।

अनन्त नाटक आ दर्शक

कालीकान्त तृषित

मुसरी बाबू, कुशल अभिनेता
आइ अपना टोलमे, जननेताके रोलमे,
नाटक देखैलनि, डायलॉग आगा बढ़ौलनि ।
हम जनसेवक छी, सप्पत सेहो खएने छी
राजनीतिक धर्म निर्वाह करब, जे कहब से किन्नहु ने करब
गिरगिटसँ यारी, मनमे मक्कारी
सफलताक सोपान अछि, से भरपूर हमरो ज्ञान अछि ।
मुदा हे जनता जनार्दन,
अहाँ सर्वशक्तिमान छी, अहीं महान छी ।
अहाँक पीठपर लात धऽ हम उपर चढ़ब
अहाँ हमरा चढ़ाउ, आगा बढ़ाउ
हम आश्वासन देब, भाषण देब
अहाँ अहीसँ चित्त बुझाउ
कोनो उपराग लऽकऽ नहि आउ
खाहे अहाँ बाढ़िमे दहा जाउ
अथवा भुखमरीसँ मरि जाउ
मुदा हे जनता जनार्दन

तैयो अहाँ महान छी, सहनशक्तिक प्रबल प्रमाण छी ।
हमरा-अहाँमे अदभुत अनुबन्ध अछि
एक तरहक विलक्षण सम्बन्ध अछि
अहााके घर उजड़त, हम बिल्डिङ बना लेब ।
अहाँके पीड़ासँ लाखो कमा लेब ॥
चन्दा डोनेशनके ठाढ़े पचा लेब ॥
ताहूपर अहाँसँ ताली पिटबा लेब ।।
तखने पर्दा खसल दर्शक ताली पिटलनि ।
तात्कालिक विश्राम भेल, ई नाटक चलिते रहत से ज्ञान भेल ।
मुदा तखने नेपथ्यसँ आवाज अयलै
जँ अहाँ दर्शके बनल रहब तँ,
माटीके माधो छी, मुर्दा समान छी
परम अकान आ सुच्चा बुड़िवान छी
मुदा हे जनता जनार्दन,
यथार्थ इएह छैक
सचमुच अहीं सर्वशक्तिमान छी, अहीं महान छी
मुदा आश्चर्य तैयो चुपचाप मुर्दा समान छी
केहन नादान छी ।

माओवादीके नामपर

प्रमोदकुमार झा

आश नहि विश्वास गुमल, बाँचल के मुइल छै
मृत्युक आभास पाबि, जीवन भेल शूल छै

साँझ-प्रात दिन होए, चाहे राति होए घुप्प,
बूटक ओ खटर-पटर, धम्म-धम्म शोर मचल
मृत्युलोक उतरि गेल, नरकक जमदूत छै ॥

गोली चलय ठाँय-ठाँय, फुटै बम धम-धम,
दिन-राति लगा गश्त, करय सभक मोन त्रस्त
एक हटय तानि उठै दोसर बन्दूक छै ।

गामक चौपाल उठल, ढोल गीत झाल उठल

गहूम धान भेल लुप्त, खरिहानक टाल उठल
कर्ज पैंच लेन-देन, करब बुझू भूल छै।

रक्षक आ भक्षकके पहिचानब दुभर भेल
लुच्चा लफंगा आ छाँटल उचक्काकें
जुटा जुटा गाम गाम बनिरहल समूह छै।

बाटघाट लूटपाट मचबयला टोल टोल
राजावादी, प्रजावादी, माओवादीक नामपर
खाओवादीसभक सेहो अलग एक हूल छै।

प्रसव-पीड़ा

रूपा धीरू

प्रसव-पीडाँ छटपटाइत ओ
अइ कोलासँ ओइ कोला करैत
बोदरि छलि पसेनासँ,
किछु कालक पश्चात चौरीमे हलचल भेलैक
आ प्रसन्नताक लहरि पसरि गेलैक
ओकर बाप हाथमे राखल बहिंगाकेँ
खुशीसँ उछालि फेकलक दूर कऽ
ओ बड़ पोरगर नेनाकेँ जन्म देने छलि।
ओ बड़ प्रसन्न छल
ई सोचि
जे काल्हि ई हम्मर
बाँहि पूरत, पँचपज्जी बोझ उठएबाक
सामर्थ राखत,
तखन फागुनेमे बेसाह लगबाक डर नहि रहत
प्रातभने गिरहतक खरिहानमे बोनि लेबाक लेल
बड़ हुलसगर मोनसँ पहुँचल ओ
हुनकर दलानपर बड़कीटा मोटर चमचमाइत छलनि
पता चललै जे गिरहतक पुतौहुकेँ

सातम महिना छियनि
दड़िभंगा जा रहल छथि
दुस्साहस कऽ ओ अपन बुधनी,
आ गिरहतक पुतौहुक तुलना कएलक
आ
बहिंगा ठामे गाड़ि देलक बोझपर
ओ गिरहतके नेहोरा करऽ लागल–
“मालिक परसौतीक लेल दालि-चाउर
बड़ जरूरी छै
कने, बोनि ....”
“की बजलैं ?”
ओ गरजि उठलाह– “सार नहितन
जतराक बेरमे तोँ .....
अपने भनसियाजकाँ
बूझैत छिहीक ?”

कविकोकिलकेँ प्रणाम

सतीशचन्द्र झा ‘सजल’

उगना बनि अङनामे अएला शिव जनिक गाम
मैथिलीक वरद पूत कविकोकिलकेँ प्रणाम

विषक घोँट पीबि-पीबि बिस्फी अछि जीबिरहल
अपन लाल गुदड़ीकेँ भऽ अधीर सीबिरहल
अपन माटिकेर किलोल सुनहक कवि छविक गाम
मैथिलीक वरद पूत कविकोकिलकेँ प्रणाम

माटि-पानिमे सानल सुरभित अछि जनिक गीत
कतहु कृष्ण-राधिकाक डोरीसँ बन्हल प्रीत
सरस रचित गीतनादसँ झङ्कृत नगर-गाम
मैथिलीक वरद पूत कविकोकिलकेँ प्रणाम

हरबाहक ठोर नित्य जनिक गीत मुसुकिरहल
जनिक शब्द सङ्गीतक स्वर कोकिल कुहुकिरहल
मधुमय मिथिलाक भूमि, कण-कणमे जनिक नाम
मैथिलीक वरद पूत कविकोकिलके प्रणाम

एक गीत मैथिलीक

धीरेन्द्र प्रेमर्षि

कुल, मूलके 'धूल' बनाकऽ
हम कहाबी कुलपति यौ
काहि काटिकऽ माए मरैए
हम दिआबी सद्गति यौ

हाथी गेल, हथिसारो गेल
पर सिक्कड़ि नेने ठाढ़े छी
जाठि उखड़िकऽ बनलै जारनि
तैयो मुग्ध महाड़े छी
गप्पक पुष्पक विमान उड़बैत
खूब करै छी उन्नति यौ
काहि काटिकऽ माए मरैए
हम दिआबी सद्गति यौ

हमरा अङना आबि नचैए
कहाँ-कहाँक जमूरासभ
हम मगन-मन बँसुरी टेरी
कतबो उड़बै धूरा सभ
देखैत बतासा, बनी तमाशा
जाएत ई कहिया नेनमति यौ
काहि काटिकऽ माए मरैए
हम दिआबी सद्गति यौ

मोँछ टेरिकऽ कही गर्वसँ
होइत ने शेरक झुण्ड छै
हमरासबहक अलगे चानन
अलग-अलग तिरपुण्ड छै
खिध्यांशक खेतीमे कहियो
भेल ने प्रेमक अवगति यौ
काहि काटिकऽ माए मरैए

हम दिआबी सद्‌गति यौ

बुन्न-बुन्नसँ भरितै पोखरि
बुन्नहु मुदा बँटाएले छै
घाटक के सम्भार करत
ईंटोपर लोक धपाएले छै
मादा काँकोड़ हम्मर मिथिला
मैथिल खद-खद सन्तति यौ
काहि काटिकऽ माए मरैए
हम दिआबी सद्‌गति यौ

औ कविकोकिल की कएलहुँ अहाँ
रचि-रचि केवल भक्ति-श्रृङ्गार
हमरासबहक सोनित बनि गेल
सूनि-सूनिकऽ धवल पिठार
गीत क्रान्तिकेर आबिकऽ एकबेर
लिखियौ कवि विद्यापति यौ
काहि काटिकऽ माए मरैए
हम दिआबी सद्‌गति यौ

अप्पन मिथिला

हृदयकान्त झा

आउ मिलिजूलिकऽ सबगोटे जीबि लैत छी ।
मिथिलाके शत शत प्रणाम करैत छी ॥

कहिओ नै ककरोसँ हम किछु मंगै छी ।
अपनालए सबदिन हम लल्ले रहै छी ॥
ओना दानीके चाकर बना लैत छी ।
मिथिलाके .... ।

देह छोडि हम विदेह बनल छी ।

शक्तिकेर हम जनक बनल छी ॥
ओना मिथिलाक नाम हम मोन पाड़ै छी ।
मिथिलाक ....

अपने की कहू सबकेओ जनै छी ।
सभ दिन हमसभ धर्मक मान रखै छी ।
ओना मण्डनकेर नाम हम मोन पाड़ै छी ।
मिथिलाके .... ।

शब्दक सरससँ सम्मान करै छी ।
मृदुल भास अनुराग गबै छी ॥
ओना विद्यापतिके ने छोडि सकै छी ।
मिथिलाके .... ॥

मनक बात मनमे

सरोज खिलाडी

सामनेमे तँ हम चुपचाप छलहुँ
परोछमे हम बरबराइत रहै छी
हुनका सामने हम हँसऽ नहि सकलहुँ
अएनाके सामने हम किए मुस्किआइ छी ?

मनक बात हम हुनकासँ कहऽ नइ सकलहुँ
अखन हम किए पछताइ छी
हुनका आगू किछु बाजऽ नहि सकलहुँ
अखन हम किए नोर बहबै छी ?

मनेमन कहै छलहु अहाँ विन जीयब कोना
सामनेमे नहि कहऽ सकलहुँ
संकोच आ डरसँ चुपचाप छलहुँ
मोनसँ कहियो हँसऽ नहि सकलहुँ ।

यादमे हुनक कते दिन नोर बहाउ
हुनक इच्छाके हम बुझऽ नहि सकलहुँ
ओ तँ हमरा पौने छली
हुनका हम पाबऽ नहि सकलहुँ ।

अखनो यादमे हुनक डूबल रहै छी
कनियो चैन नहि पाबऽ सकलहुँ
एहन केहन रोग भऽ गेल हमरा
इलाज हम करबऽ नहि सकलहु ।

गलती तँ हुनकेसँ भेल
ओहो तँ हमरा कहऽ नहि सकली
ताली तँ हम बजाबऽ चाहलहुँ
मुदा दुनू हाथके मिलन कराबऽ नहि सकलहुँ
मनक बात मनेमे २

गीत

भोरका किरण सन अहाँक रूप-रंग
कतेक नीक सुन्दर मुस्कान ऐ
अहाँके हँसिए तँ हम्मर जान ऐ

चन्द्रमासँ उतरल चन्द्रमाके टुकरा
ओ बनि गेल अछि अहाँक मुखडा
स्वर्गक परी अहाँ, खिलैत गुलाब अहाँ
अहाँके हँसिए ....

नइ कोनो फैसन नइ कोनो सिंगार
तैयो लगै छी अहाँ, स्वर्गक अप्सरा
दुःखीके हँसी अहाँ, प्यासलके पानि अहाँ
अहाँ छी गजलके भाव ऐ
अहाँके हसिए ....

भोरका किरण सन अहाँक रूप रंग
कतेक नीक सुन्दर मुस्कान ऐ
अहाँके हँसिए ....

आजुक जीवन

विजया अर्याल

प्रत्येक दिन मृत्युसँ सापट मांगिकऽ
बाँकी-बक्यौता देबऽ लेल
ऋणक रूपमे बाँचिरहल अछि जीवन ।
प्रत्येक क्षण मृत्युसँ पैँचा मांगिकऽ
क्षतिपूर्ति करबाक हिसाबसँ
व्याजक रूपमे भरिरहल अछि जीवन ।
जीवन आर्जन करबाक हिसाबमे नहि
जीवन प्रत्येक क्षणक ऋण देबाक हिसाबसँ
चुकएबाक दरमे असुल-उपर भऽ रहल अछि ।
युद्ध आ शान्तिक जोड़-घटाउमे
भूखक बारूद लऽकऽ
माटि खाएपर मजबूर भऽ रहल अछि जीवन ।
अखन डेराओन मुँहसभ
अमूर्त्त अर्थमे नुकाएल जीवनके, आँटाक संग बदलिकऽ
विवशतासँ बाँचिरहल अछि ।
इच्छा आ महात्वाकांक्षीक कोठीके
प्रदूषित वातावरणके तोड़ल समयमे
संघर्षे-संघर्षक बीचसँ भागि
मनुक्खक अस्तित्वपर दाग लगाबऽ लेल
सर्कसक जोकर बनि बाँचिरहल अछि जीवन ।
खोजमेसँ लाएल संरचनामे, अपनेसँ लगाएल आगि
जरिरहल पृथ्वीक भागमे शान्ति शान्ति करत
छितिर-बितिर भेल शताब्दीक हड्डीमे मलहम लगाबऽ
क्षेप्यास्तसँ काटल गेडी लऽकऽ
कछुआक गतिमे चलिरहल अछि जीवन ।

विवेकरहित विनाश

धर्मेन्द्र मिश्र

विवेकरहित विनाश पत्थरपर
विप्लव आ विपर्यक हाहाकार मचौने अछि ।

हिंसाके प्रतिकारक नाम दऽ
कौरवक सीमा बढ़ौने अछि
कार्यक्षेत्रमे व्यवधान उत्पन्न कऽ
सोनितसँ देश मशाल बनौने अछि ।

शीतल माहमे विभत्स-लीला
अपन आ आनक आकार घटौने अछि
कारण मनक द्वन्द्वक वृहद लीला
अपनेमे नया इतिहास रचौने अछि ।

हँसैत मानव ह्रास मुद्रामे
अपनेसँ अपन घरबार डुबौने अछि
कालरात्रिक कारी छायामे
तैयो मानव धूल चटैत ओत लागल
खोँता बनौने अछि ।

हाय रे कलियुग

सञ्जीवकुमार चौधरी
जलेश्वर– ७, महोत्तरी

सत्ययुगसनके गुरु नइ, मास्टरजी सब बनि गेल
मानवतामुखी शिक्षा नइ, व्यावसायिकरण भऽ गेल
शिक्षा नहि आब ज्ञानक लेल, प्रमाणक रूपक बनि गेल
सभा नहि आब ज्ञानीसभके, रटुवासभके भऽ गेल ॥

जतेक पाबिली ओतेक दुःखी, असन्तोषी सभ बनि गेल
जिनगी नइ आब त्यागऽ लेल, स्वार्थी बनिकऽ रहि गेल ।
दोसर लेल किछु नहि कएली, कहिकऽ पछताइबला नइ रहि गेल

धनके पाछू जिनगीभरि, भागाभागमे रहि गेल ।

सम्बन्धमे किछु प्रगति नइ, भावना बदलिकऽ रहि गेल
माता-पिता आ गुरुक विश्वास, शंकाक बलि चढ़ि गेल ।
गुणीसँ कहियो सम्बन्ध होइ छल, सुन्दरता प्रमुख भऽ गेल
आत्मिक मिलन पहिने होइ छल, शरीरक मिलन बनि गेल ।

अखन किछु आविष्कार नहि, विध्वंशे सभकिछु भऽ गेल
प्रकृतिक स्वच्छता मेटाकऽ, रोगीक घर बनि गेल ।
कलियुग कलियुग कहिते कहिते, सत्ययुग समाप्त भऽ गेल
विकृति बढाबऽ परिवर्तन देखिकऽ हाय रे कलियुग कहा जाइए ॥

चिन्ता

गंगेश मिश्र ‘शास्त्री’

प्रकृति सुन्दरीके आङनमे
भऽ रहल कोलाहल औ क्रन्दन
अनल चतुर्दिक ज्वालामे
झलकि रहल मानव जीवन ।
ममताकेर कोष शून्य भेल
कुन भेल विखण्डित भुजाहार
थैया थैया करैत सूरति
टुग्गर भऽ बैसल निराहार ।
टुटि गेल कतेकेर स्वप्न महल
नित बहारहल अछि अश्रुधार
शोणितसँ धरती लाल भेल
ओ बुझारहल अछि पारावार
स्वार्थकुण्डकेर प्रखर अग्निमे
हविष बनल अछि मानवता
कान दग्घ अछि काकस्वरसँ
कहाँ मधुर-स्वर कोमलता !
बहारहल अछि शोणित शोणित
व्याकुल अछि सगरो नगरी
जनपथपर बारुद ढेर अछि

अछि व्याप्त वेदनाके लहरि ।
हे मानवताके महाशुर !
की ? इएह अहाँक नीति गूढ़ ?

गामक लोक

सुदीपकुमार झा
कुम्हरौड़ा– ७, धनुषा

बुधना मुसहरके चाही
दू पौआ घोंघी
चारि पौआ उसना चाउर
मंगला लोहारके चाही
संठीके काठी आ रहबाके मकान
सगुनमा गोआरके चाही
दू कट्ठा खेत आ चारि मन धान
डोमना बाभनके चाही
दस घर पुरहिती एगारह किलो चाउर
बारह छिमी केरा, मिसियाभरि छाउर
डोला मिसरके चाही
एकगोट रहठा / किछु लस्सा, चारिटा घुरघुरा
फँसल दूटा चिड़इ
चिचिआइत मालिक, मालिक !

ईसभ अछि हमर गामक लोक
बढ़म बाबाके ठोप
खाइए झरल झिल्ली
पीबैय कुपिया लऽकऽ पानि
ढारैय लोहियामे तेल / एक-दू मुन्ना
बजबैय झुनझुना
मिरदंग आ झालि बाबा बजबै छलाह

बाबाके बाबा
हमर गामक डिहबार
हुनकर बड़का कपार
बारह बिघाके जिराइत

बारहगोट हाथी, बारह सय घोड़ा
बरह जोर पोखरिमेका तराइत माछ
खाइत छलाह भोर, ढेकरैत छलाह साँझ

खा गेल माछ
बचल खाली झोर
हमर गामेके लोक
नेरायल दालि भात तरकारी
किए ककरो फिकिर
भरत कोना एक सय बखारी
सोरहो पकमान सजल चानीक थारी
सौंसे दुनिया अछि शोर
हमर गामक लोक, बड़ कमजोर ।
मुदा से किएक ?
आखिर अछि हमरो दूगोट हाथ
पुष्ट अछि करेजा
संसारभरिक माथ
जँ हेल सकी कोशी
जँ फानि सकी गण्डक
पसारी अपन लात
होएत दुनिया मुट्ठीमे
सुरुजक अइ कात
चनरमाके ओइ कात ।

जल सैन

काशीकान्त झा
गैढ़ा-भेटपुर– १, महोत्तरी

जलक्रिडामे लीन छलीह देखिकऽ साओन मास
सब अंग खिलल देखलहुँ हुनका लागल छल मधुमास ।

नहि होश कनिको छल हुनका ओ पूर्ण छली मदहोश
चढल रंग साओन मासक ताइपार योवनकेर जोश
केश खोलिकऽ जलमध्यमे करैत छलीह ओ राश
सब अंग खिलल देखलहुँ हुनका लागल छल मधुमास ।

पएर उठाकऽ जलसँ उपर रोकने छलीह आकाश
नजर झुकौने ठाढ़ ओइठाम देखलहुँ सूर्य प्रकाश
नइ चूमि सकल ओइठाम हुनका तैं छल ओ निराश
सब अंग खिलल देखलहुँ हुनका लागल छल मधुमास ।

मन्द गतिकैं जलप्रवाह नइ वस्त्र कनिको तनपर
ओ दृश्य देखलियै नइ छल हुनका काबु अपना मनपर
हम दृष्टि दोष कएलहुं ओइठाम नइ बात भेल किछु खास
सब अंग खिलल देखलहुँ हुनका लागल छल मधुमास ।

मनमे एक तरंग उठल हुनका संग करी जल सैन
मस्तीमे.डूबल रहब हुनका संग दिन-रैन
नइ छलीह ओ हमर प्रियतमा तैं भेलहुँ हम उदास
सब अंग खिलल देखलहुँ हुनका लागल छल मधुमास ।

कल्पना आ यथार्थ

अमरेन्द्र यादव
दिघबा, सप्तरी

जिनगीक हड़हड़ खटखटसँ दूर
मृत्युक तगेदासँ अन्जान बनल
जिनगीक व्यस्त समयसँ
किछु पलखति चोराकऽ
अहाँक यादक उड़नखटोलापर
हम उड़ि जाइछी
प्रेमक अन्तरिक्षमे ।

नदीक ओहि पार
दू गछिया तर
हमर कोरामे औंगठल
हमरा संग हँसैत-बजैत
खाइछी अहाँ सप्पत
अहाँक तरहत्थीकैं चूमिकऽ
खोंसि दैछी एकटा गेनाक फूल हम
अहाँक खोपामे ।

जखनि हमर नाकमे अचानक
ढुकैए जराइन तरकारीक गन्ध
आ अकचकाइत उठैछी हम
मिभ्कबऽ लेल स्टोभ
तखनिए हमर नजरि पड़ैए
टेबुलपर राखल चिट्ठीपर
जे काल्हि एलै हमर गामसँ
तखने हमर आङनमे नाच लगैए
बाबुक फाटल बेमाय
भरना लागल खेत
बहिनक कुमारि सींथ
भाइके पढाइ-खर्च
आ मायक दम्मा बेमारी ।

प्रेम

नरेश मिश्र
जनकपुर– ४

प्रेमसँ जे किछु कहब अहाँ
हम प्रेमसँ सुनि सकैछी
अहाँ अप्पन आक्रोश हेरा लिअ
हम पौतीमे नुकाकऽ राखि सकैछी ।

कतबो चोट पहुचा दिअ अहाँ
हम बदलाब नहि बूभ्कि सकैछी
अहाँक स्नेह उपहार बुभ्किकऽ
अपन मोनमे चोराकऽ राखि सकैछी ।

साथीक बदलामे साथी भेटए
हमरा नहि ई बूभ्कल अछि
मुदा एक दिनहाँ कमलसँ नीक
सवदिनमा कटहरिया फूल होइछै ।

स्नेह भरल मीतक बदलामे
ओहने मीत भेटब भाग्यक खेल थिक
इहए कारणे तिरस्कारो अहाँक
खुशी मोनसँ स्वीकार अछि ।

इजोरियाक बात अहाँ दूरे छोड़ि आउ
हम अन्हरियोमे जीबऽ लए सीखि नेने छी
प्रेमसँ जे किछु कहब अहाँ
हम प्रेमसँ सूनि सकैछी ।

चलैत मन्दिर

–प्रभाकर चौधरी
तुल्सियाही निकास –९, धनुषा

सुन्दर दह पहाडपर,
    मन्दिर श्यामल लौकिरहल अछि ।
संगमरमर शिखर बीच गंगा,
    दूरेसँ चमकिरहल अछि ॥ १ ॥
जिनकर पहाड हुनकर मन्दिर,
    ओहिपर दुनिया चलिरहल अछि ।
श्यामल शुन्दर मनमन्दिरमे,
    जीवन अमृत भरल परल अछि ॥ २ ॥
बादल मन्दिरके झँपने अछि,
    बीचमे शिला ताकिरहल अछि ।
के मन्दिरके आबि बहाड़त
    मनेमन ओ सोचिरहल अछि ॥ ३ ॥
मन्दिरके दर्शन हेतु
    पागल दुनिया मरिरहल अछि ।
अधिकार तँ दुइएटाके छैक
    मन्दिरवाली कहिरहल अछि ॥ ४ ॥
पर्वत कोमल कठोर नहि बुझू
    सौम्यसँ गमकिरहल अछि ।
प्रभाकरके मन्दो प्रभास
    सुन्दर मन्दिर निखरिरहल अछि ॥ ५ ॥

बाल आवाज

विनित ठाकुर
मिथिलेश्वर मौवाही– ६, धनुषा

छी हम बेटी अहिँके सन्तान
केराके कोमल विर समान
बेटा-बेटीमे करबै जँ भेद एना
होएत बेटीक सपना पूरा कोना ?

पढ़ि-लीखि बेटा अपन नाम कमेतै
बैसिकऽ बेटी कोना घरमे जीवन बितेतै ?
बेटी जहिया घर-घरके पढ़तै
मिथिलामे एकटा नयाँ चान उगतै ।

कतेक खेलत कनियाँ आ पुतरा
बेटी अहाँके ई करेजक टुकरा
हमरा अहाँ ज्ञानक नैन दिअ
जीवनके शान्ति आ चैन दिअ ।

थुकहा

ठाकुर अमरकान्त 'अमर'

गाँमक चौबटियापर
सभक्यो भोरे-भोर बैसल
चाह पिबाक आसमे
ओ आस जे जिनगीक लेल
एकटा भट्ठी बनाकऽ
सुखाएल टटाएल चमरी
गुद्दाके बाते नहि
हड्डीएटासँ भरल ओकर देह
लकलक देह जेना एकटा सन्ठी
आगिक तापसँ लड़ैत
अपन जिनगीसँ झगड़ैत

केटलीक दूध, पानि संगहि खौलबैत
धूआँक प्रकोपसँ अपन अमूल्य नोर बहबैत
ओ बैसल आ,
चौबटियापर चाह बनबैत ओ थुकहा ।

ओहे थुकहा,
जे अपन जिनगीक संघर्षमे
जीबाक लक्ष्य आ किछु करबाक उमेदमे
भोरसँ साँझधरि बैसल रहैत अछि ।
जिनगीसँ लड़खड़ाइत
आ
टिटहीसन देह पियरका गुलाबसन
कखन झड़त से नहि जानि
मुदा,
टिटहीसन देह
आ, पियरका गुलाब कर्मनिष्ठतासँ भरल
ओकर जिनगीक आधार अछि
चाहक बेपार ।
कर्तव्यविमूढ़ नहि भऽ
मुदा,
की लिखल कपार
पुत्रप्राप्तिसँ बताह
जीवन संगिनी सेहो अधलाह
किनको आस नहि ओकरामे
अपन काजक बलसँ जीवन निर्वाहमे
ओकर जिनगी कखनधरि से नहि जानि
मुदा तैयो
बाँचल जिनगीमे प्रयासरत
सूर्य किरणसँ पहिने
नित दिन चौबटियापर कर्मशील
अपन जीविकोपार्जनमे लागल
अपन गाम, घर आ माटिमे मीलि
एक मात्र आस कर्तव्यक
बैसल अपन कर्तव्यक आरुढ्यपर थुकहा ।

हमर खिस्सा

निमेष कर्ण ‘आस्था’

हमर खिस्सा सूनब तँ
एकटा घैल फोड़ि लिअ
छिटाएल खपडासभ उठाकऽ
ओकरासभके जोड़ि लिअ
तब,
ओही बिम्बसँ हमर खिस्सा पूछब
चिन्तन करब, मनन करब ब बूझब
ताहिके बाद अहाँ बूझि जाएब
हमर खिस्सासभ
तखन अहाँ जानि सकैछी
हमर खिस्सापिहानीसभ
गोड़ लगैछी अखन नहि पुछू
हमर बड़का खिस्सा
पर्दा हटाकऽ नहि देखू
अतीतक खिस्सा-पिहानीसभ
हमर खिस्सा जनबे करब तँ
एकटा घैल फोड़ि लिअ
छिटाएल ....
ओकरासभके जोड़िकऽ
ओहि बिम्बसँ हमर खिस्सा पूछब
चिन्तन करब, मनन करब, अपने बूझब
पहाड़सन पैघ अछि हमर खिस्सा
नदीजकाँ कहिरहल अछि ओ
ओहि खिस्सामे नुकाएल अछि हमर दिन आ राति
ओइ खिस्सा-पिहानीक यादमे
कनैत अछि हमर नाम
हमर खिस्सा ....
एकटा घैल ....

अन्त होइत अछि कथाके

हंशराज साह,

मिर्चैया– ९, सिरहा

हे शहीद
अहाँके बलिदानक कथा
सोनित आ नोरक धारमे बहिकऽ
समाप्त भऽ रहल अछि ।

हे मैथिल सपूतसभ
अहाँक वीरताक कथा
पूरा पछियाक गरदामे
लोप भऽ रहल अछि ।

हे शान्तिके अग्रदूतसभ
अहाँद्वारा कएल मार्गदर्शन
मारकाट आ आगिमे जरिकऽ
छाउर भऽ रहल अछि ।

हे राजनेतासभ
अहाँक त्यागके कथा
भ्रष्टाचारके पोखरिमे डूबिकऽ
निसाँसित भऽ रहल अछि ।

हे शान्तिके अग्रदूतसभ
एकबेर फेर आबिकऽ
मार्गदर्शन कऽ दिअ
आ शान्तिक अन्त होबऽ सँ रोकि लिअ ।

अपन गाम

प्रवीण चौधरी ‘प्रतीक’

गेल छलौं अपन गाम,
खुशी आ उमंगक संग
पहुँचलापर गाम ....
हमर खुशी, ... उड़ि गेल
जेना उड़ैछ कर्पूर ।

बाग बगिचा सरपट देखलहुँ
भुमि बज्जर आ खरिहान खाली देखलहुँ
सोचल छल ....
चहुँदिस हरियरी भेटत
चहचहाइत भेटत चिड़ै चुनमुन
हे भगवान, ई की भेल !
अपन गाम कतऽ डूबि गेल !
कोन गाछीक आम तोड़ब
कोन बारीक लताम
कोन नदीक माछ मारब
कोन पोखरिमे नहाएब,
बस्ती बनल अछि खण्डहर
ठोरपर पपड़ी पडैत लोक
उताहुल अछि लोक
चण्डाल बनऽ लेल ।
ईसभ देखिकऽ
आखिसँ नोर बहरा गेल
हे भगवान, ई की भेल
हमर खुशी आ उमंग
कतऽ पड़ा गेल ।

राष्ट्रियता ?

अजितकुमार लालकर्ण 'अमन'

बजाकऽ हमरा अनकापर निर्भर
जीयब जीवन बनाकऽ दुलर्भ
अन्नपानि हमरे खा कऽ
विदेशी कहि सम्बोधन करताह
उपरसँ ओ राष्ट्रियता खोजताह

फिजीकरणके हल्ला कऽकऽ
टोपीकरण ओ करबै छथि
आउ कने हुनकोसँ पुछियनि
इतिहास ओ कते जनै छथि ?

भारत नेपाल किए हम की
मात्र एतेक हम जनैछी
बहादुर मान टोपीके नहि
धोतीके हम पुत्र छी ।

हमर नगरी अछि मिथिला महान
बनौने अछि अपन अलग पहिचान
हमर नगरी अछि मिथिला महान
जतऽ जन्म तँ पाव एक नाम

सीता जनमली तँ मैया कहेली
कहियो नहि फेर घूमि मिथिलामे एली
तैयो कहाय एक धाम
हमर नगरी अछि मिथिला महान

खेती आओर पातीमे अछि बड़ा नामी
बर्षा महिनाक तँ गीत अछि दामी
माटी एतऽ के कृषिप्रधान
हमर नगरी अछि मिथिला महान

विद्यापति तँ छलथि बड़ा जिद्दी
महादेवपर पएने छलथि सिद्धी
नाम उगनाक छै गामे गाम
हमर नगरी अछि मिथिला महान

शान्तिसँ नहि क्रान्तिसँ

राधेश्याम चौधरी
लोहारपट्टी, महोत्तरी

कहि गेल गौतम बुद्ध अहाँके, सभ काज करब शान्तिसँ
हम कहै छी अहाँके, अधिकार लऽ लिअ क्रान्तिसँ

शिर उँच कऽकऽ अहाँ कहियौ हम मिथिलाके देशी छी
गर्वसँ कहियौ धोती बाला, हम मिथिलाके मैथिल छी
केओ भाषाक लेल कहत तँ याद करा देबै मल्ल वंशसँ
कहि गेल गौतम बुद्ध अहाँके, सभ काज करब शान्तिसँ

हाथ-पएर ठीक अछि तँ नहि ककरो आश करू
मंगलासँ भीख भेटत अहाँ हमरापर विश्वास करू
भीख नहि माँगू, अधिकार छीनि लिअ सामन्तीसँ
कहि गेल गौतम बुद्ध अहाँके, सभ काज करब शान्तिसँ

दल दल

ईश्वर दाहाल 'सिन्धुले'

कतेक अप्रिय छल भऽ गेल जिनगी
कतौ नहि चढ़ऽ वाला जल भऽ गेल जिनगी ।

घोँकाएल पानिमे माछ मारिकऽ भागि गेलहुँ
जल विनाके कल भऽ गेल जिनगी ।

मिझाएल चूल्हिजकाँ हम जी रहल छी
केओ नहि ओढ़ऽ वाला शाल भऽ गेल जिनगी ।

ककरो कोनो काम नहि आबऽ वाला भऽ गेली हम
उबजऽ नहि सकल दल-दल भऽ गेल जिनगी

उन्टा हवा

वीरेन्द्र पासमान

जाहि गाछपर बैसल रे हंसा
ताहि गाछकेँ काटिरहल अछि ।

करम नामपर कानिरहल हंसा
पूर्व वा पश्चिम जा कऽ सब सगरो मरिरहल अछि ।

गुणके कारणे कहल जाएवाला आदमी रे हंसा
राक्षसी आ विध्वंश काजमे लागिरहल अछि ।

प्रेममे जीबऽ वाला अन्हारमे बैसल रे हंसा
अन्धकारमे बाँचऽ के सीखिरहल अछि ।

ओ के छली ?

सुधाकर झा

देह झरकल, मुह पाकल
आ बिमार
एकटा बुढ़िया
हमरा सपनामे अबैए ।

आँखिमे नोर लेने
हमर सिरमालग बैसिकऽ
अपन हाल सुनबैए
तोँहु तँ छौँ हमरे सन्तान
के कहै छौ दोसरके
हिस्साके द्वारे
सभक दियाद अहिना कहैछ ।

एते कहिकऽ ओ फेर
अपन हाल सुनबैए
हमरे देहपर फोड़ैए
हमरे कमजोर सन्तानके मारैए
आ, तो निश्चिन्त भऽ सूतल छौँ !

तखने हमर आखि खुजैए

आ हम चिन्तित भऽ जाइछी
आ सोचऽ लगैछी ओ के छली ?
हमरा एना किए कहलनि ?
कहीँ ओ नेपाल तँ नहि छलीह !

नाम हमर खेहरु

नवीन ठाकुर 'कृष्णांशी'

नाम हमर खेहरु, जाइतके हम दुसाध
नहि जानि समाजक कोन राजनीतिमे पड़लहुँ भेल ई फसाद ।

ब्राह्मण, भूमिहार छैक पैघ जनमसँ, ई बात नहि बुझलौँ
मात्र शोषणके उपाय ई, पुस्तोसँ अहि जालमे फसलौं ।

मनुके बात लागल, चाणक्य नीतिसँ दागल
ब्रह्मज्ञान नहि होइतो अहंकारमे अछि ब्राह्मण ।

दुनियाके ठकि-ठकि अपन जेब भरैए
सुगाजकाँ मन्त्र पढ़ाकऽ मिथिलाके बूड़िबक बनबैए ।

शूद्र कहिकऽ छोट बूझि कलम कागज ई छीनि लेलनि
बीसक धन दूमे कीनिकऽ अट्ठारह बैसिकऽ कमा लेलनि ।

हम छुआइ छी दूरेसँ, हिनकर परलोक बिगरै छनि
हमरे बनाओल ढकिया सरबामे हिनकर भगवान पुजाइ छनि ।

हिनके धीयापुतासभ जाति-पाति नारा लगौतनि
दोस्त-महिमके पैघ कहिकऽ अपन छाती फैलांतनि ।

छुआछूत हटाबऽ लेल इहो जोर-जोरसँ चिचिअएता
आगू बढ़ऽ बेरमे ई टाँग घीचऽ अएता ।

हाय रे मिथिला आडम्बरसँ भरल ई बस्ती
गरीबके आँखिमे नोर, धनिकके हरक्षण मस्ती ।

कविता

दीपक झा 'उदय'
महोत्तरी– ३, महोत्तरी

संगहि जेबाक इच्छा छल हमर
एकगोट ऊँच पहाड़क आगाँ
दूगोट आँगुर अचार अचानक छूटल
ओ पहाड़क खुरपेड़िया होइत
गगनके शरणमे प्रवेश करैत छली
मुदा हम अबोध बालक बनि
देखैत छलौं हुनक प्रगतिपथकेँ

किछुए क्षण बाद हम काँटे काँटसँ
घेरल गुलाब भऽ गेलौं
हम मुदा ओ निफिकिर छथि
कनेको मतलब नहि छनि हुनका

हम लड़िरहल छी काँटसब सँगहि
अपन अस्तित्वक खोजमे
शिर उठा तकैत छी हुनका
ओ तँ फूलसँ बहराएल कुम्हर भऽ गेल
आब तँ असह्य नहि लाइब सकब ई भाडी
पड़ेलौं द्रोणाचार्यजकाँ हम
जल्दी जुमलौं मुक्ति देबऽलए हुनका
सम्हरिकऽ चलबाक सूक्ति देबऽलए हुनका

उठलौं एकगोट खड्ग आ
काटि देलियै
टुकड़ी-टुकड़ी कऽ देलियै
बलि मिथिलामहिकेँ
मुदा खड्ग सोणितक लेश नहि
जँ चानन करी ।

ओ

राजकुमार देव

आकाशमे अछि ओ आउर जमीनपर हम
आइ-काल्हि ओ एमहर देखैत अछि कम ॥
आइकाल्हि किनको ओ टोकैत नहि अछि ?
चाहिते कुछो करू मुदा ओ रोकैत नै अछि ॥

भऽ रहल अछि लूटमार फटि रहल अछि बम ।
आकाशमे अछि ओ आउर जमीनपर हम ॥

किनका पठेतनि ओ एतऽ खुद्दी बिछबालए ।
एहिठाम भीड़के हाल-खबर जानबालए ॥

आदमी अछि अनगिनत देवता अछि कम ।
आकाशमे अछि ओ आउर जमीनपर हम ॥

ओतेक दूरसँ देखैतो हेतैक तँ
हमरासबके लेल की करतै ओ ।
जिनगी अछि अपन-अपन वाहुबलके दम ।
आकाशमे अछि ओ आउर जमीनपर हम ॥

कविके दुर्दशा

महेन्द्रप्रसाद मण्डल 'वनवारी'

तुलीमे ढारै छलौं जल, दुलफीमे दिया गेल ।
दुनियाके लोक हँसै, कवि हमर पिया भेल ॥
कवि बाबू कवि बाबू भेल सगरे सोर ।
साँझे निकलै घरसँ घूरिकऽ आबै भोर ॥
गामेगाम बौआइ फिरै, खाय अपना तरुआ ।
कतबो सम्झाबै छी, बुझबे नहि करै टिकजरुआ ॥
जन-बोनिमे हम खटै छी, घरमे साटै लेबा ।
टाका-पैसाके थाहे नहि, भाषाके करैय सेवा ॥
घरमहक मूस भूखे मरै केकरा लागत ई पाप ।
कपार जरि गेल हमर, बैमान बनल बाप ।
गहना-जेबर बेचि, बेचलक पएरके छारा ।

दिनभरि कविता बाँचैए बसमे दैए भारा ॥
ऋण-कर्जा करिकऽ छपौलक अपन रचना ।
आधा पुस्तक मंगनी बँटलक आधा खेलक मुसना ॥
के छल जे एहन कविक कएलक उत्पति ।
कमाइसँ बेसी करैए अपन छति ॥
कवि कहे परिवारके किए करै छल हमर खिधांस ।
मरि-मीटि जाएब दुनियासँ अमर होयत इतिहास ॥
कवि नइ धनिक होइए ने राखै मनमे शान ।
हजारो कवि बीति गेल अमर हुनक शुभ नाम ॥

गीत

रविन मिश्र
बेल्ही ३, सप्तरी

होनी होइछ होएबे करतै अनहोनी नहि होइ
सिनेह, प्रेम तँ दुनिया छियै एकरा नहि रोकै केओ ।

प्रेम पवित्रक बन्धन छियै, प्रेम नहि माने जाति-धरम
प्रेम तँ मिलनाइ किस्मत छियै, प्रेम नहि देखए कोनो करम
प्रेम नहि देखए उमर बराबर, सबहक संग ई होइ ।
होनी होइछ होएबे करतै अनहोनी नहि होइ

जीवनक परिभाषा प्रेम छी, प्रेमे छियै दुनियाके धन
केओ बताबए वा नहि बताबए, प्रेम रखैय सबहक मन
मुदा बताबे ई केओ केओ
होनी होइछ होएबे करतै अनहोनी नहि होइ

दुनिया कहै छै प्रेम नहि करी, ई तँ छियै दिलक रोग
होनीए तँ होएबे करतै नजर बचाबए कतबो लोग
घूरि-घुरि कनबै, राति-राति जगबै संगे बदनामियो होय
होनी होइछ होएबे करतै अनहोनी नहि होइ

अएना

—सन्तोषकुमार मिश्र

हम किए ने किए, ओकरा देखऽ नै चाहै छी
जे हमरा आगूमे बैसल अछि
की ओकरासँ बाजऽसँ पहिने किछु सोचै छी....
की हम ओ आवाज सुनने छी....
जे हमर भीतरसँ निकलैय !

हम पक्का बेबकूफ छी
हम पक्का पागल छी
पक्का हमरा बुद्धि नहि अछि
एहन विभिन्न बातसभ
हम रातिमे बड़बड़ाइत रहैत छी ।

अएनासभ देबालपर लटकाएल छै
ई हमरा कहऽके नहि अछि
अए अएना ! हमहुँ चाहै छी—
अहाँ हमरासँ प्रेम करू

अहाँ हमरा बचपन फेर लाबि दिअ
हमर बचपन आनि दिअ
किए हम अहाँकेँ असगरे चलऽ दिअ
कखनि अहाँ हमरा कहने छलहुँ,
जे हम नहि कएली आ हमरासँ गलती भऽ गेल

हम अप्पन अहंकारकेँ रस्तेपर छोड़ली
एक क्षणक प्रेमक मस्तीकेँ
हम अपना-आपसँ शिकाइत करै छी
हम मूर्ख छी, हम पागल छी,
हमरा पक्का बुद्धि नहि अछि ।
हम ओकरा कहै छियै
जे बीतल राति हमरा साथ छल
खाली कामना हमर सपना अछि
भऽ सकैए हमर सपना साँच भऽ जाय
भऽ सकैए हमरा आ अहाँसँ

दूटा आगू आबए आ ठाढ़ भऽ जाय ।

यदि अहाँ हमरा देखाबऽ चाहै छी
तँ क्यो हमर अप्पन बनिकऽ देखा दिअ
हमरा फेर बच्चा बना दिअ
हमर बचपना फिरता कऽ दिअ
हमर बचपना फिरता कऽ दिअ ।